Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पर्यटन के संदर्भ में मैनपाट का भौगोलिक विश्लेषण

डॉ.के.सी गुप्ता*

* सहायक प्राध्यापक (भूगोल) किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रायगढ़ (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – आज मानव ने सभी क्षेत्र में प्रगति की है। प्राकृतिक संसाधनो का भरपूर दोहन कर सम्पूर्ण विश्व आर्थिक विकास के होड़ में लगा है। एक तरफ प्राकृतिक संसाधनो का दोहन और दूसरी तरफ अत्यधिक अर्जित करने का तनाव मानव जीवन को अवसादग्रस्त कर दिया है। फलस्वरूप अशांति और कई प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों से मनुष्य जूझ रहा है। उससे मानव जीवन की गुणवत्ता में कमी आई है। ऐसे में प्रकृति प्रदत्ता मनोरम स्थलों का महत्व और बढ़ जाता है क्योंकि जंगल, नदी, झरने, पहाड़, जीव-जन्तु और ऐतिहासिक, पुरातात्विक धार्मिक स्थल मानव मन को शांति और ज्ञान प्रदान करते हैं। इसलिए आज मनुष्य ऐसे जगहों की तलाश करता है जिससे पर्यटन का महत्व दिनोदिन बढ़ता जा रहा है।

भारत में अनेक विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं। यहाँ पर्यटन से कुल 42 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार मिला है। 2019 में देश के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन का लगभग 9.3% एवं 2022 में 201.37 अरब अमेरिकी डॉलर का योगदान था। पर्यटन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2022 में राष्ट्रीय पर्यटन दिवस को 'ग्रामीण और सामुदायिक केन्द्रित पर्यटन' के रूप में समर्पित किया। इस प्रकार 2023 का थीम 'पर्यटन और हरित निवेश' रहा। 2024 में 'सतत यात्राएं, कालातीत यादें' थीम रखकर यात्रा और पर्यटन को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र – अध्ययन क्षेत्र मैनपाट छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में स्थित है जो विंध्याचल पर्वत का हिस्सा है। यह एक हिल स्टेशन है जिसे छत्तीसगढ़ का शिमला कहा जाता है। यह 22°49' उत्तरी अक्षांश से 22°81' उत्तरी अक्षांश तथा 83°16' पूर्वी देशांतर से 83°28' पूर्वी देशांतर के बीच अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल 68 वर्ग किमी है। यह समुद्र तल से 1085 मीटर ऊँचा है। प्रकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण मैनपाट अम्बिकापुर से 75 की.मी. की दूरी पर स्थित एक गाँव है। जनगणना 2011 के अनुसार मैनपाट तहसील की कुल जनसंख्या 76573 है।

अध्ययन का उद्देश्य – अध्ययन क्षेत्र मैनपाट प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है। यह एक पर्यटन स्थल है जहाँ प्रतिवर्ष पर्यटक आते हैं। इस अध्ययन में यहाँ के पर्यटन स्थलों को रेखांकित कर पर्यटकों को आकर्षित करना है। यहाँ का भौगोलिक परिवेश विविधता लिए हुए है जिसका पर्यटन के संदर्भ में विश्लेषण कर पर्यटन के मानचित्र में इसे नयी पहचान देना है।

अध्ययन विधि – प्रस्तुत अध्ययन मुख्यत: स्वयं के पर्यवेक्षण पर आधारित है। जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

मैनपाट का भौगोलिक विश्लेषण

1. **धरातलीय स्वरूप एवं भूगर्भिक संरचना –** यह एक पाट प्रदेश है। ऊँचे पहाड़ी एवं पठारी भागों से सुसज्जित, यह भाग छुरी उदयपुर की पहाड़ियों से लगा हुआ है। यहाँ से मांड एवं रिहन्द नदियाँ निकलती हैं।

इसकी भौगोलिक संरचना दक्कन ट्रेप की चट्टानों से हुई है। यहाँ की धरातलीय बनावट पर्यटन हेतु लोगों को आकर्षित करते हैं।

प्रवाह प्रणाली– मैनपाट से निकलने वाली प्रमुख नदियां मांड एवं रिहन्द हैं। मांड,महानदी की सहायक नदी है। इसका उदगम सरगुजा जिले के मैनपाट के निकट की पहाड़ियाँ हैं। इसकी लंबाई 241 किमी है। यह रायगढ़ एवं जांजगीर-चांपा जिले मे प्रवाहित होती है तथा छत्तीसगढ़ के शक्तिपीठ चन्द्रपुर के निकट महानदी में मिल जाती है। कुरकुर और कोईराज इसकी सहायक नदियाँ हैं जिनके प्रवाह मार्ग में अनेक सुंदर प्राकृतिक दृश्य हैं।

रिहन्द नदी का उदगम सरगुजा के अम्बिकापुर तहसील के मतिरिंगा पहाड़ी से हुआ है। छत्तीसगढ़ में यह 145 किमी लंबाई में प्रवाहित होती है। इसे रेर, रेहर, रेणुका, रेणु आदि नामों से जाना जाता है। उत्तरप्रदेश और छत्तीसगढ़ की सीमा के बीच रिहन्द बांध का निर्माण किया गया है। यह नदी उत्तरप्रदेश के सोनभद्र जिले में सोन नदी में मिल जाती है। ये दोनों नदियाँ मैनपाट के प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जलवायु– यहाँ उष्ण कटिबंधीय मानसूनी प्रकार की जलवायु पायी जाती है। छत्तीसगढ़ की तरह यहाँ भी ग्रीष्म,वर्षा और शीत वस्तुएं पायी जाती-हैं किन्तु यहाँ ग्रीष्म ऋतु का तापमान 32°c से 40°c तक पाया जाता है। जो छत्तीसगढ़ के अन्य क्षेत्रों से कम है। अत: यहाँ ग्रीष्म ऋतु में पर्यटन हेतु अनुकुल वातावरण रहता है। मैनपाट में वर्षा ऋतु एवं शीत ऋतु का वातावरण अत्यंत सुखद और मनोहारी होता है। यहाँ शीत ऋतु का तापमान बहुत कम होता है,जिससे कभी-कभी बर्फ की हल्की चादरें बिछ जाती है। यह पर्यटकों को आकर्षित करता है।

प्राकृतिक वनस्पति – यहाँ पतझड़ वाले वन पाये जाते हैं। यहाँ साल वनों की अधिकता है। यह क्षेत्र औषधीय पौधों एवं जड़ी-बूटियों के लिए प्रसिद्ध है जहाँ शतावर,शफेद मूसली,काली मूसली, ब्राम्हीं,भुई आंवला,बच,पाताल कुम्हड़ा,भुईनीम,बच आदि पाये जाते हैं। मैनपाट का लगभग 38% भाग पर वन पाये जाते हैं जो यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाते हैं।

मृदा– मैनपाट की रचना ज्वालामुखी उदभेदन से हुई है। यहाँ पायी जाने वाली मिट्टी को मैन मिट्टी के नाम से जाना जाता है, इस कारण इस प्रदेश का नाम मैनपाट पड़ा। यहाँ की मिट्टी में एल्युमिना की मात्रा पायी जाती है। यहाँ अधिकांश भाग पर लेटेराईट मिट्टी पायी जाती है। जिसका रंग लाल होता है।

इससे यहाँ की एक अलग पहचान बनती है।

वन्यजीव एवं पशुपक्षी – मैनपाट क्षेत्र के 38% भाग पर वनों का विस्तार है जहाँ सुरक्षित वातावरण होने के कारण बंदर, तेंदुआ, भालू, जंगली सूअर,चीतल,खरगोश आदि वन्य जीव एवं अनेक प्रकार के पशु-पक्षियाँ पाये जाते हैं। यहाँ वनों में दुर्लभ प्रजाति के पामेरियन कुत्तो और गौरैया पक्षी भी देखे जा सकते हैं।

विशिष्ट कृषि स्वरूप – मैनपाट छत्तीसगढ़ में एक अलग कृषि स्वरूप एवं फसलों के लिए जाना जाता है। यहाँ तिब्बतियों द्वारा टाऊ की खेती का प्रसार किया गया था। दूर-दूर तक फैले टाऊ के खेत मनोरम दृश्य उपस्थित करते हैं। राऊ से मैदा बनाया जाता है। यह क्षेत्र आलू के उत्पादन के लिए भी जाना जाता है । स्ट्रॉबेरी,नाशपाती,अमरूद,अनार एवं चेरी के लिए यहाँ की जलवायु उपयुक्त है। यहाँ मिलेट्स अनाज जैसे मक्का, कोदो-कूद की खेती की जाती है।

खनिज पदार्थ – मैंनपाट पूरे छत्तीसगढ़ में बॉक्साइट उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। बॉक्साइट का खनन सी एम-डी-सी द्वारा किया जाता है।

मैनपाट के पर्यटन स्थल

उल्टा पानी – यह मैनपाट का सबसे कौतूहलवर्धक स्थल है। पर्यटक सबसे पहले उल्टा पानी जाने को उत्सुक रहते हैं। यहाँ पानी उपर की ओर बहता दिखाई देता है। यह बिसरपानी गाँव में स्थित है इसलिए इसे बिसरपानी के नाम से जाना जाता है। उल्टा पानी का उदगम पत्थर के नीचे से हुआ है। यह 185 मीटर की दूरी तक प्रवाहित होता है। यहाँ पर भू -चुंबकीय क्षेत्र है जहाँ गाड़ी को न्यूट्रल पर खड़ी कर देने पर गाड़ी स्वत: आगे बढ़ने लगती है। यह एक आश्चर्यजनक स्थल है। यहाँ अनेक विद्वानों और शोधकर्ताओं और देश के प्रमुख टीवी चौनलों के पत्रकारों का भी आगमन हो चुका है।

दलदली – दलदली भी मैंनपाट का एक आश्चर्यजनक एवं मनोरंजक स्थल है। यहाँ उछलने से भूमि भी उपर उछलती है। पर्यटक यहाँ पर उछल-उछल कर आनंद लेते हैं। यहाँ सभी उम्र के पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है।

मेहता पोईंट – मैनपाट से 8 किमी की दूरी पर उंची पर्वतीय शृंखलयों के बीच एक खूबसूरत झरना है। मेहता संस्कृत के महिता से लिया गया है जिसका अर्थ 'प्रशंसित' या महान है। यहाँ पर्यटकों के ठहरने के लिए वन विभाग का विश्रामगृह उपलब्ध है।

टाइगर पोईंट – यहाँ कई बार टाईगर देखा जाता है इसलिए इसे टाइगर पोईंट कहा जाता है। यहाँ 30 मीटर की ऊंचाई से एक झरना गिरता है। यहाँ पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। सघन वनों के बीच स्थित मनोरम स्थल में बहुत अधिक बंदर देखे जा सकते हैं।

बौद्ध मंदिर- मैनपाट में बौद्ध धर्म को मानने वालों की संख्या 967 है। यहाँ तिब्बती लोग आकर बस गए हैं। जहाँ बौद्ध वास्तुकला से निर्मित बौद्ध मंदिर छत्तीसगढ़ में प्रसिद्ध है। इस मंदिर में पूजन-अर्चन करने से शांति का अनुभव होता है। धर्मप्रिय पर्यटकों के लिए यह आध्यात्मिक स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मछ्ली प्वाईंट- मछ्ली प्वाईंट मैनपाट का अत्यंत मनोरम स्थल है । यहाँ एक खूबसूरत झरना है जिसके नीचे रंग-बिरंगी मछलियाँ देखी जा सकती है। पहाड़ों और जंगलों के बीच स्थित यह स्थल पर्यटकों को आकर्षित करता है ।

परपटिया – परपटिया मैनपाट से लगभग 30 किमी की दूरी पर स्थित है । जहां अस्त होते हुए सूरज की अलौकिक सुन्दरता मन मोह लेता है । घुमावदार पहाड़ियों एवं सघन वनों से आच्छादित यह क्षेत्र प्रकृति की अनमोल उपहार है ।

निष्कर्ष – छत्तीसगढ़ के शिमला के नाम से विख्यात मैनपाट अपनी प्राकृतिक सुंदरता एवं मनभावन जलवायु के कारण स्थल को शासन द्वारा संरक्षण एवं संवर्धन किया जाना अवश्यक है। यह स्वास्थ्यवर्धक 'हिल स्टेशन' है जहाँ सुविधाएं उपलब्ध कराकर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।इसके अलावा यहाँ सुंदर प्रजातियों के फूल-पौधों का रोपण कर यहाँ की सुंदरता में चार चाँद लगाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. स्वयं का पर्यवेक्षण
2. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, जिला सरगुजा
3. Statista.com 2024
4. https://utsav.gov.in
5. https://www.chhattisgarhtourism.in
6. https://www.applive.com
7. स्थानीय लोगों एवं बौद्ध मंदिर के प्रमुख से साक्षात्कार

****